भारत सरकार
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. **1392** जिसका उत्तर
शुक्रवार, **10 फरवरी**, 2023/21 माघ, 1944 (शक) को दिया जाना है

मेगा पत्तनों का निर्माण

†**1392. श्री विनोद कुमार सोनकर :**
श्री राजवीर सिंह (राजू भय्या) :
श्री राजा अमरेश्वर नाईक :
डॉ. सुकान्त मजूमदार :

क्या **पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने 2047 तक अधिकतम मेगापोर्ट बनाने के अपने महत्वाकांक्षी मास्टर प्लान के तहत देश में बेहतर पोर्ट कनेक्टिविटी के लिए तीन ट्रांसशिपमेंट हब की पहचान की है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या केरल में कोच्चि और विजिंजम के पत्तनों के साथ-साथ अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में गलाथिया खाड़ी को मेगा पत्तनों के रूप में विकसित करने हेतु पहले दौरा में चयनित किया गया है;
(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ङ) क्या भारत का लगभग 75 प्रतिशत ट्रांसशिपमेंट कार्गो विदेशी पत्तनों पर संभाला जाता है; और
(च) यदि हां, तो सरकार की इस पर क्या प्रतिक्रिया है और इस संबंध में सरकार द्वारा अन्य क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

उत्तर
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री
(श्री सर्बानंद सोणोवाल)

(क) से (घ) : वर्तमान में, भारत सरकार द्वारा तीन प्रस्तावों नामत: ग्रेट निकोबार द्वीप में गलाथिया खाड़ी को विकसित करने, कोचिन पत्तन को ट्रांसशिपमेंट सुविधा के रूप में विकसित करने पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त, केरल सरकार भी निजी निवेशक के सहयोग से और वित्त मंत्रालय (भारत सरकार) की आंशिक वित्तीय सहायता से केरल के विझिंजम में एक ट्रांसशिपमेंट परियोजना का विकास कर रही है।

(ङ) और (च) : वर्तमान में, भारत के लगभग 75% ट्रांसशिपमेंट कार्गो का संचालन कोलम्बो, सिंगापुर और क्लांग सहित भारत के बाहर के पत्तनों पर किया जाता है। सरकार ने उपर्युक्त

तीन प्रस्तावित ट्रांसशिपमेंट परियोजनाओं पर विचार किया है जिसका उद्देश्य भारतीय पत्तनों द्वारा संभाले जाने वाले भारतीय कार्गो ट्रांसशिपमेंट की प्रतिशतता बढ़ाई जा सके। इससे, विदेशी पत्तनों पर ट्रांसशिपमेंट के कारण खर्च होने वाले विदेशी विनिमय की बचत करने और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को प्रोत्साहित करने में सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त, इसके परिणामस्वरूप अन्य भारतीय पत्तनों पर आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होगी, लॉजिस्टिक्स अवसंरचना में विस्तार होगा और इस प्रकार प्रचालन दक्षता, रोजगार सृजन और राजस्व हिस्सेदारी में वृद्धि होगी।

****